३. सफर का साथी और सिरदर्द

-रामनारायण उपाध्याय

मुझे अकेले यात्रा करने में आनंद आता है । इससे चलती रेल में से पैरों के नीचे से निकल जाने वाली नदी में कल्पना में डुबकी लगाने, जो पास लगते हैं उन वृक्षों के निरंतर पीछे छूटते चले जाने और जो दूर हैं उन भागते वृक्षों का साथ निभाने में बड़ा मजा आता है ।

यात्रा में अगर कोई साथी मिल जाए तो ऐसा लगता है मानो वह मेरी निगाह चुरा रहा हो । मैं किसकी ओर एकटक निहारता हूँ, किसे देखकर नाक-भौं सिकोड़ता हूँ और कौन मेरे एकांत क्षणों का अंतरंग साथी है, इन सब बातों पर कोई निगाह रखे, यह मुझे कतई पसंद नहीं ।

कभी-कभी जब रेल की खिड़की से बाहर झाँककर दूर के दृश्य, किसी प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखना चाहता हूँ, जैसे सूर्योदय और सूर्यास्त तभी मेरी दृष्टि उचटकर किसी वृक्ष की डाली पर पाँव टिकाए बच्चों को देखने में जा उलझती है तब कैमरे के हिल जाने की तरह सारा दृश्य गायब हो जाता है और मैं सोचता ही रह जाता हूँ कि आखिर मैं देख क्या रहा था ?

कभी-कभी मेरी दृष्टि नदी किनारे के सौंदर्य को निहारना चाहती है । इसी बीच जैसे आँख में कंकरी गिर जाए, ऐसे रास्ते में पहाड़ी के आ जाने से सारा दृश्य चौपट हो जाता है ।

कभी-कभी मेरा मन उच्चाकाश में उड़ने वाले पक्षियों के साथ अनंत के ओर-छोर नापना चाहता है । इसी बीच रेल किसी गुफा में प्रवेश कर जाती है, और तब लाचार मन को भी, मन मारकर सुरंग की उस पतली लकीर में से निकलने को बाध्य होना पड़ता है ।

वैसे मुझे बस की यात्रा कतई पसंद नहीं । उसमें यह भी जरूरी नहीं कि बगल में बैठने वाला आदमी हमारा मनपसंद ही हो । अनेक बार तो ऐसे व्यक्ति से पाला पड़ता है जो रूठी हुई पत्नी की तरह लाख मनाने पर भी सीधे मुँह बात नहीं करता और अगर उससे प्रश्नों के जरिये छेड़खानी की जाए तो हाँ-हूँ में जवाब देकर खिड़की से बाहर मुँह लटका लेता है । कभी-कभी ऐसा भी साथी मिल जाता है कि आप चाहे सुनें या न सुनें, वह अपनी बात तब तक सुनाता रहेगा, जब तक दो में से एक उतर न जाए ।

मुझे सुपरफास्ट ट्रेन के बजाय एक्सप्रेस से यात्रा करना ज्यादा पसंद है । कारण सुपरफास्ट ट्रेन का स्वभाव उस विशिष्ट व्यक्ति की तरह होता है जो रास्ते में मिलने वाले बराबरीवालों की उपेक्षा कर, बड़ों से मिलने दौड़ा जाता है । उसे आदमी से अधिक अपनी चाल पर नाज होता है जब कि एक्सप्रेस

परिचय

जन्म : १९१८, खंडवा (म.प्र.)
परिचय : पं. रामनारायण उपाध्याय स्वतंत्रतापूर्व के लघुकथाकार हैं । आपकी भाषा शैली सरल, सहज और प्रभावशाली है । आपकी व्यंग्य, ललित निबंध, रूपक, रिपोर्ताज, लघुकथाएँ, संस्मरण आदि विधाओं में ३० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । आपने हिंदी भाषा के साथ-साथ लोकभाषा एवं विभिन्न बोलियों के संवर्धन के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'बख्शीशनामा', 'धुँधले काँच की दीवार', 'नाक का सवाल', 'मुस्कराती फाइलें' (व्यंग्य संग्रह) 'मृग के छौने' (निबंध संग्रह), 'हम तो बाबुल तेरे बाग की चिड़ियाँ' (लोकसाहित्य), 'जिन्हें भूल न सका' (संस्मरण) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य निबंध में व्यंग्यकार ने रेलयात्रा में माँगकर अखबार पढ़ने वालों, अनावश्यक बात करने वालों, बिन माँगे सलाह देने वालों पर करारा व्यंग्य किया है । लेखक का तात्पर्य यह है कि हमें इन बुराइयों से बचना चाहिए ।

एक दोस्त की तरह दूर से स्टेशन देखकर अपनी चाल धीमी कर देती है, सबको अपने हृदय में स्थान देती है और जब चलती है तो इस कदर धीरे जैसे कोई एक मित्र दूसरे से विदा ले रहा हो ।

अपने को तो भाई साहब, रेल की खिड़की से दुनिया देखने में बड़ा मजा आता है, ऐसे लगता है जैसे शीशे में से डिब्बेवाला बाइस्कोप देख रहे हों ।

लेकिन कोई देखने दे तब तो ! जैसे ही आपने पाँव रखा और अपनी सीट पर बैठे कि सामने की सीट पर बैठा यात्री आपके झोले में से झाँकते अखबार की ओर देखकर पूछेगा, ‘‘क्या मैं इसे ले सकता हूँ ?’’

भले ही आपने उसे अभी-अभी खरीदा हो और उसे खोलकर पढ़ना तो दूर पन्ने पलटकर भी न देखा हो; लेकिन आपके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना अखबार सामने वाले के हाथों में होगा । अब आपकी स्थिति माँगने वालों की हो जाएगी और आप उत्सुकता से राह देखेंगे कि समाचारपत्र अब लौटे कि तब । तभी वे सज्जन एक जम्हाई लेकर उसे बेतरतीबी से मोड़ते हुए किसी दूसरे माँगने वाले की ओर इस तरह शान से बढ़ा देंगे मानो समाचारपत्र आपका नहीं; उनकी निजी संपत्ति हो । देखते-देखते समाचारपत्र के पन्ने एक-दूसरे से जुदा होकर पूरे डिब्बे के चक्कर काटने लगेंगे । मजे की बात यह है कि एक समाचारपत्र के कितने उपयोग हो सकते हैं, इसका अंदाज रेल की यात्रा करते समय ही लगाया जा सकता है । कोई ललित निबंध के तो कोई संपादकीय पन्ने से अपनी सीट झाड़ता नजर आएगा । कोई समाचारपत्र फैलाकर उसपर भोजन करता दिखाई पड़ेगा । बेचारे समाचारपत्रवाले ने भी कभी सोचा नहीं होगा कि उसके पत्र के इतने उपयोग हो सकते हैं ।

इन सबसे परेशान होकर जब आप पीछे की ओर सिर टिकाकर कुछ क्षण आराम करना चाहेंगे, इसी बीच सामने से प्रश्न उछलेगा- ‘‘कहाँ तक चल रहे हैं ?’’

आप अनमने मन से कहेंगे- ‘‘भोपाल तक ।’’

पूछेंगे- ‘‘भोपाल गाड़ी कितने बजे तक पहुँचती है ?’’

कहेंगे- ‘‘सवा तीन बजे ।’’

उनका तर्क होगा- ‘‘पहले तो चार बजे पहुँचती थी ।’’

कहा- ‘‘टाइम बदल गया ।’’

बोले- ‘‘गाड़ी में तो कई जगह चेन पुलिंग होती होगी । आज की तारीख में पहुँच जाएँ, यही गनीमत है ।’’ आप सोचेंगे चर्चा का अंत हुआ । तभी तीर की तरह प्रश्न उछलेगा, ‘‘आप हबीबगंज उतरेंगे या भोपाल ।’’ कहा- ‘‘हबीबगंज ।’’ पूछा- ‘‘हबीबगंज क्यों ?’’ कहा- ‘‘वहाँ से तुलसीनगर पास पड़ता है ।’’

परिच्छेद पर आधारित कृतियाँ :-

✻ भले ही आपने उसे ......
उपयोग हो सकते हैं ।

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

सफर में समाचारपत्र की स्थिति
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) लिखिए :

[ ]
↑
सफर में समाचारपत्र से होने वाले उपयोग
↓
[ ]

(३) सूचना के अनुसार लिखिए :

१. परिच्छेद में प्रयुक्त समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द ढूँढ़कर लिखिए ।

२. परिच्छेद में प्रयुक्त ‘शब्दयुग्म’ ढूँढ़कर लिखिए ।

(४) समाचारपत्र की आवश्यकता के बारे में अपने विचार लिखिए ।

वे चिढ़कर कहेंगे– ''खाक पास पड़ता है । ऑटोवाले पाँच–सात रुपये ऐंठ लेंगे । इससे तो अच्छा है आप भोपाल स्टेशन उतरते, वहाँ से चार कदम चलने पर टेंपो मिल जाता है, जो पचास पैसे में टी.टी. नगर और फिर पचास पैसे में तुलसीनगर तो क्या, अरोरा कॉलोनी उतार देता है ।''

सोचा, 'कहीं यह पुनः हबीबगंज स्टेशन ले जाकर वहाँ से वापस ट्रेन में न बैठा दें,' अतएव चुप्पी साधकर निश्चल बैठ गया।

अगर आप यात्रा पर हैं तो आपको सहयात्री के प्रश्नों का जवाब देना ही होगा ।

पूछा– ''भोपाल में क्या करते हैं ?''

कहा– ''मीटिंग में जा रहा हूँ।'' वे कहना शुरू कर देते हैं– ''अपन तो वल्लभ भवन के एकाउंट सेक्शन में हैं । लोगों के बिल बनाते–बनाते अपना भी वेतन निकल जाता है । रहने को ठाठ से सरकारी क्वार्टर मिला है। बीवी और दो बच्चे हैं ।

अगर ट्रेन में रेलवे कर्मचारी का साथ हो जाए तो सारे रास्ते गाड़ियों के शंटिंग करने की आवाज सुनाई देगी । कोई कहेगा, ''एट अप से आ रहा हूँ, सेवन डाउन से लौटना है । अगर स्टेशन मास्टर ने सिग्नल नहीं दिया और गाड़ी आउटर पर आकर खड़ी हो गई तो रात वापस घर लौटना मुश्किल है। आजकल तो 'मेल' को रोककर 'माल' को पास करना पड़ता है । कारण मालगाड़ी में भरे माल के बिगड़ने का डर रहता है, जबकि मेल में बैठा आदमी बिगड़ता नहीं । अरे, नाराज भी तो नहीं होता ! क्या खाकर नाराज होगा । अगर शिकायत करना चाहे तो शिकायत पुस्तिका माँगे, जब तक शिकायत पुस्तिका आएगी, तब तक रेल चली जाएगी।''

दूसरे ने कहा– ''मैं 'पूछताछ विभाग' में काम करता हूँ । लोग–बाग भी कैसे–कैसे सवाल पूछते हैं ? कोई पूछता है, 'दस बजे वाली रेल कब आएगी, कोई पूछता है, छोटी लाइन वाली गाड़ी कहाँ पर खड़ी होगी ?' मानो उसके बड़ी लाइन पर खड़ी होने का अंदेशा हो । एक दिन एक आदमी ने तो कमाल कर दिया । पूछा– ''क्यों भाई साहब, बिना टिकिटवालों के लिए बाहर जाने का रास्ता किधर से है ?''

मैंने कहा– ''मेरे पास बैठ जाओ । मैं भी एक दिन इसी तरह रास्ता पूछते–पूछते यहाँ आया था, अब लोगों को बाहर जाने का रास्ता बताने का काम कर रहा हूँ ।''

एक बार एक सहयात्री ने पूछा– ''क्यों भाई साहब, क्या आप यात्रा पर जाने से पहले आरक्षण करा लेते हैं ?''

मैंने कहा– ''यह तो सहज बात है। आजकल बिना आरक्षण के यात्रा करना सिरदर्द मोल लेना है।''

लेखनीय

यात्रा के लिए आरक्षण करने की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कीजिए तथा आरक्षण का नमूना फॉर्म भरकर अपनी कॉपी में चिपकाइए ।

पठनीय

'बढ़ती जनसंख्या का असर रेलयात्रा पर भी दिखाई दे रहा है,' इससे संबंधित निबंध पढ़िए ।

वे बोले– ''आप भी अजीब आदमी हैं। सिरदर्द तो आरक्षण कराने में है। हफ्तों चक्कर काटते हैं तब कहीं एक सीट मिलती है। आप शान से टिकिट जेब में रखते हैं, अकड़कर डिब्बे में प्रवेश करते हैं और जब कंडक्टर को आरक्षण का टिकिट दिखाते हैं तो वह हिकारत भरी निगाह से कहता है, ''जब टिकिट है तो क्या देखना ? नहीं होता तो देख लेता।'' वह दूसरे यात्री के पास जाता है। उसके पास न टिकिट है न आरक्षण। इशारे-इशारे में कुछ बात होती है और उसे, वह जहाँ से चाहता है, जहाँ तक के लिए चाहता है वहाँ तक के लिए सीट मिल जाती है। देखा नहीं आपने, रेल के हर डिब्बे पर लिखा है– 'भारतीय रेल जनता की संपत्ति है, इसे सुरक्षित रखिए' लेकिन इसके पीछे एक अलिखित इबारत भी होती है, 'भारतीय रेल कंडक्टर की संपत्ति है .....।'

साँझ हो चली थी, डिब्बे की बत्तियाँ जलने लगी थीं, लोगों ने अपने-अपने होल्डॉल बिछाने शुरू कर दिए। मैंने भी थककर चूर हो जाने के कारण सिरदर्द की एक गोली खाई और लेटना चाहा।

सहयात्री ने देखा तो पूछा– ''क्या आपको सिरदर्द हो रहा है?''

मैंने कहा– ''जी हाँ।''

बोले– ''आप ऐसी-वैसी गोलियाँ क्यों खाते हैं, इससे रिएक्शन हो सकता है। फिर पूछा– ''कल क्या खाया था। रास्ते में कहीं पूरी-कचौड़ी तो नहीं खा ली ? अरे ! ये रेलवे ठेकेदार कल की बासी पूरी-कचौड़ी को उबलती कड़ाही में डालकर ताजा के नाम पर बेचते हैं। कहेंगे हाथ लगाकर देख लो, गरम है कि नहीं। उन्हें तो अपनी जेब गरम करनी है।''

''मैं तो घर से पराँठे लेकर चलता हूँ। रास्ते में कोई और पराँठेवाला मिल जाता है तो दो और दो-चार मिलाकर खाने में मजा आ जाता है।''

फिर पूछा– ''आपको सिरदर्द कितने समय से है ? क्या यह पैतृक बीमारी है या केवल आपको ही है ?''

मैंने कहा– ''मेरे परिवार में सभी के सिर हैं, अतएव सबको सिरदर्द होना स्वाभाविक है।''

वे बोले– ''क्या आप भी बिना सिर-पैर की बातें करते हैं। जिनके पाँव में शनि होता है उन्हें भी सिरदर्द होता है, जिनके पेट में गैस होती है उन्हें भी सिरदर्द होता है।''

मैंने कहा– ''आप बजा फरमाते हैं। जब मैं घर से चला तो भला-चंगा था, ट्रेन में बैठा तब भी कोई शिकायत नहीं थी, किताब पढ़नी चाही तब भी मन आनंद से हिलोरें ले रहा था, लेकिन जब से हमसफर सहयात्रियों ने सिर खाना शुरू किया तो बेचारा सिर, दर्द नहीं करे तो क्या करे? सच कहता हूँ, भाई साहब ! मैं सिर दर्द से नहीं, हमसफर यात्रियों के दर्द-ए-सिर से परेशान हूँ।''

o

श्रवणीय

जीवन में स्वच्छंदता कैसे हानिकारक हो सकती है, इसके बारे में सुनिए और बताइए।

संभाषणीय

कचरा बीनने वाले से संवाद कीजिए और मुख्य मुद्दे बताइए।

शब्द संसार

कंकरी स्त्री.सं.(दे.) = छोटा कंकड़
सुरंग स्त्री.सं.(सं.) = जमीन खोदकर उसके नीचे बनाया हुआ मार्ग
नाज पुं.सं.(फा.) = गर्व
अंदेशा पुं.सं.(फा.) = आशंका, पूर्वानुमान
हिकारत स्त्री.सं.(अ.) = घृणा, नफरत
इबारत स्त्री.सं.(अ.) = लिखा हुआ, अक्षर विन्यास
बजा वि.(फा.) = उचित, ठीक

मुहावरे

नाक-भौं सिकोड़ना = अप्रसन्नता,घृणा प्रकट करना
चौपट हो जाना = नष्ट होना, बरबाद होना
मन मारना = इच्छा को दबाना
चक्कर काटना = गोलाकार घूमना, फेरे लगाना
बिना सिर-पैर की बात करना = निराधार बात करना, व्यर्थ की बात करना

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) असत्य विधान को सत्य करके लिखिए :

(क) लेखक को सुपरफास्ट ट्रेन के बजाय एक्सप्रेस से यात्रा करना ज्यादा पसंद नहीं है ।
(ख) लेखक को पेटदर्द हो रहा था ।
(ग) लेखक को भागते वृक्षों का साथ निभाने में कम मजा आता था ।
(घ) सभी सिरवालों को सिरदर्द होना अस्वाभाविक है ।

(२) लिखिए :

पाठ में प्रयुक्त खाद्य व्यंजन

(३) पाठ में प्रयुक्त रेल विभाग से संबंधित शब्दों की सूची बनाइए :

____
____
____
____

(४) कारण लिखिए :

१. कभी-कभी 'मेल' को रोककर 'माल' को पास करना पड़ता है ।
२. लेखक को सिरदर्द की गोली लेनी पड़ी ।

(५) दिए गए शब्दों से तद्धित तथा कृदंत शब्द बनाइए :

लाचार
लिखना
दौड़ना
झाँकना
सज्जन
परेशान

तद्धित	कृदंत
------	------
------	------
------	------
------	------

अभिव्यक्ति 'मेक इन इंडिया' नीति पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर कोष्ठक में लिखिए :

१. उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो और भी दृष्टि को उलझा लेती थी । (-------------)

२. किसी दूसरे माँगने वालों की ओर इस तरह शान से बढ़ा देंगे । (-------------)

३. कहाँ तक चल रहे हैं ? (-------------)

४. लोगों के बिल बनाते-बनाते अपना भी वेतन निकल जाता है । (-------------)

५. कल क्या खाया था ? (-------------)

६. बासी पूरी-कचौड़ी को उबलती कड़ाही में डालकर ताजा के नाम पर बेचते थे । (-------------)

७. तभी तीर की तरह शब्द उछलेगा । (-------------)

(२) सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

१. किसी प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखना चाहता हूँ । (अपूर्ण भूतकाल)

----

२. एक-दूसरे से जुदा होकर पूरे डिब्बे के चक्कर काटने लगेंगे । (सामान्य वर्तमानकाल)

----

३. मुझे अभिवादन का ध्यान आया । (पूर्ण भूतकाल)

----

४. मानो वे किसी हड़बड़ी में चलते-चलते कपड़े पहनकर आए हैं । (सामान्य भूतकाल)

----

५. पानी अब निर्मल नहीं रहा है । (सामान्य भविष्यकाल)

----

६. मुझे देखते ही चाय हाजिर कर देती है । (पूर्ण वर्तमानकाल)

----

७. वह तुम्हे हमेशा बुरा-भला ही कहती है । (अपूर्ण वर्तमानकाल)

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए :

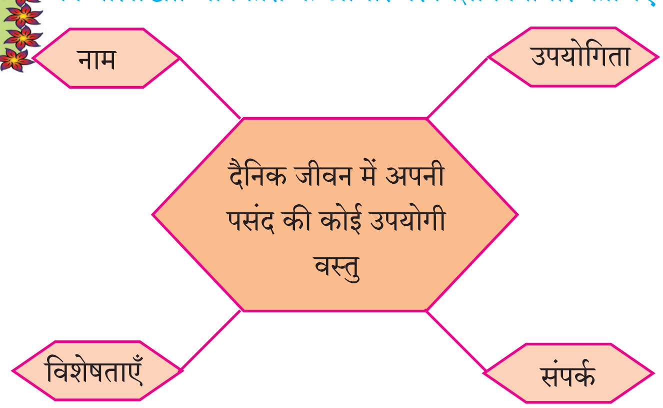

CH82LR